IJAER/January-February 2024/Volume-13/Issue-1 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) Impact Factor:7.06

''जितेन्द्र निर्मोही के साहित्य में युगीन सामाजिक चेतना''

राजाराम धाकड़
शोधार्थी राजकीय कला कन्या महाविद्यालय, कोटा

डॉ.मनीषा शर्मा
शोध पर्यवेक्षक आचार्य (हिन्दी विभाग),
राजकीय कला कन्या महाविद्यालय, कोटा

बहु आयामी व्यक्तित्व के धनी विभिन्न विधाओं में समृद्ध लेखक जितेंद्र निर्मोही का जन्म साहित्यिक वैभव की नगरी झालावाड़ में 7 अप्रैल 1953 को हुआ। झालावाड़ राज्य समृद्ध साहित्य विरासत लिए हुए था। देश में जब एक और जहां महावीर प्रसाद द्विवेदी "सरस्वती" का संपादन कर रहे थे, झालावाड़ में रामनिवास सौरभ "सौरभ" पत्रिका निकाल रहे थे। गिरधर शर्मा 'नवरत्न' की विद्वता से रविंद्र नाथ टैगोर और महामना मालवीय प्रभावित थे। रामचंद्र शुक्ल ने उनका उल्लेख साहित्य संदर्भों में किया है। झालावाड़ राज्य में साहित्य नवरत्नों की समृद्ध परंपरा थी।

आगे चलकर राजस्थानी साहित्य अकादमी उदयपुर से जितेंद्र निर्मोही ने रामनिवास सौरभ पर "हमारे साहित्य पुरोधा रामनिवास सौरभ" कृति प्रकाशित करवाई। पंडित गिरधर शर्मा 'नवरत्न' पर एक दिवसीय आयोजन झालावाड़ में रखा गया।

उनके परिवार में बाबा मनीराम शर्मा मैथिली शरण गुप्त के साहित्य उपासक थे, तो पिता रमेश चंद शर्मा मीर, गालिब, बहादुर शाह जफर की गजलों के दीवाने, मां पूर्ण कलावंत जिन्होंने कक्षा 6 में ही उन्हें राज कवियत्री केसरबाई के साहित्य से परिचय करवाया और स्वर्गीय माधव सिंह दीपक का उपन्यास "बोलती लहरें" पढ़ने को दिया। मां ने कहा, "यह गागरोन की पृष्ठभूमि पर लिखा उपन्यास है", बस यही से उनकी पुरा संपदा के प्रति रुचि बढ़ती गई। वर्ष 1979 में इनका पहला आलेख प्रसिद्ध नृत्यांगना कूकी राज पर "पाटन एक्सप्रेस" में प्रकाशित हुआ। अपने जन्म का उल्लेख वह अपनी पुरस्कृत करती "उजाले अपनी यादों के" में करते हुए लिखते हैं –

"जिस दिन मैं इस धरती पर आया मुझे कहाँ मालूम था कि जिस शहर के कतावले पोश मकान में मैं पैदा हुआ हूँ इसके सामने से जो रास्ता जा रहा है, उसके बाद वीराना आने लगता है। वहाँ पहले ईदगाह आती है, जहाँ कभी टोंक के पिण्डारी शासक नमाज पढ़ा करते थे। उसके पीछे ही एक रक्काशा कूकी का मकबरा कहा जाता है जो गज मस्तक पर नृत्य करने की सामर्थ्य रखती थी और उसके पीछे कब्रगाह जहाँ जिंदगी भर का सफर तय करके आदमी आराम से लेटता है। मेरे इस मकान के पीछे की ओर ही गढ़पैलेस झालावाड़ का एक दरवाजा है जो अभी हमेशा खुला रहता है। रियासत काल में यह कभी-कभी खुलता होगा। आज गढ़ वह स्थान है जहाँ कभी कोटा रियासत के सेनापति झाला जालिम सिंह की फौजी छावनी का ठहराव हुआ करता था। कर्नल टॉड ने इस स्थान के जंगल को वर्ष 1821 ईस्वी में शहर में बदलने की प्रक्रिया का प्रारम्भ बताया है, पर इस शहर की स्थापना 8 अप्रेल, 1838 की बताई जाती है और मेरा जन्म 7 अप्रेल, 1953 को हुआ। तारीख के हिसाब से मैं इस शहर से एक दिन बड़ा हुआ। झाला जालिम सिंह ने इस शहर का यहाँ बसने का सपना देखा था। सच कहूँ तो वे इस शहर को दरख्तों के सायों के बीच से निकालकर लाये थे। इस शहर झालावाड़ रियासत के प्रथम राजराणा 1 अगस्त, 1838 को गद्दीनशीन हुए जिनके द्वारा वर्ष 1841 के आसपास नवनीतप्रियाजी के मंदिर की स्थापना की गई।"

जितेंद्र निर्मोही की हर विद्या में युगीन प्रतिबिंब है। काव्य जगत में उन्होंने द्विवेदी काल से लेकर आज तक के कवियों को सुना है, उन्हें देखा है, उनके साहित्य को महसूस किया है तो गद्य में उनका आजादी के बाद से आज तक का अनुभव बोलता है।

ऐसा ही है उनका राजस्थानी उपन्यास "रामजस की आतमकथा"। इसमें आजादी के बाद से आज तक का अनुभव और उनकी यात्रा बोलते दिखाई देती है। रामजस के मां बाप आजादी के पहले के जन्में है, तदानुसार ही उनके नाम है, गोबरी लाल और धनी बाई -

"रामजस नै क्ही, "भाई सा असी जिदंगाणी तो आम मनख की होबो ई चाहिजै।" कांई साता का दन छा वै लोग, जबरो सबर करै छा। " रामजस का बाप को नांव

गोबर्यो सांचो पण मां को नांव धन्नी बाई धन सूं कोसां दूर। बाप जसी भी कारीगरी करै छो ऊ सूं काम चालै छो। कारीगरी मलगी तो पौ बारा न्ह तो फाकाकसी, उस्यां बी गांवां मं तो गारां का टीमला का घर होवै छा, वांई डेकल बी क्है छै अर ई मं ई चालै छी चुणाई। तवा का पींदा की नांई रामजस जद हांसै छो तो धोळा धोळा दातां की बादळां मं बत्तीसी बिजळी जस्यां चमकै छी, रामजस वां गोरा चट्टा मनख्यां सूं सवायो लागे ज्यो मन उजळो न्ह राखै, रामजस जो बी बात हो हातों हात मूंडा पै धर'र बारै खाड़ दै छै। ऊ को हिवड़ो हिमाळा जस्यो विसाल छै। घणी बार सोचूं छू, रामजस जस्या मनख कहां धर्या छै।"

रामजस का एक दोस्त है ठेले का सब्जी बेचने वाला है। वो डायरी में हिसाब लिखता है। शहर में आजादी के बाद फैशन बदलने के कारण बालकटी औरतें भी है। वह एक बालकटी औरत का हिसाब दूसरी औरतों के साथ रखता है –

"ऊ मं मंडर्यो छो – जाडकी 20 रूप्या, काली भंसूड़ी 18रू, रेटली 10 रू., तिखी नाक की 15 रू, मरझट 12 रू., हेडाली 20 रू., डोडहुसयार 13 रू., बांदरी मूंडा की 1 रू., लाम्बी 52 रू. झोटी 13 रू. बादळी 32 रू., बांका मुंडा की 22 रू. बालकटी 80 रू. डायरी में अस्यां साग भाजी को हिसाब छो। रामजस म्हई हांसतो देख'र चरड्यो बोल्यो, "भाई सा. आप बी हांस र्या छो। ई नै लुगायां का नांव बगाड़ राख्या छै।" म्हूं बोल्यो, "रामजस, आज सबद की मरजादा कहां रहगी, प्रधान मंत्री नामदार कामदार संदाई अस्यां ईं बोल़्या छै।" विपक्स का नेता कहे छै, "चौकीदार चोर छै।" राजनीत का आखा कुआ में भांगड़ली छै। समजदार मनख की जबान नै कंट्रोल कोई नै। फैर यो तो ठेला हाळो छै। सबद अब बगडग्या।"

यहां यह बताने की कोशिश की गई है कि आजादी के बाद संवाद को लेकर देश का समाज बड़ा संवेदनशील था, सामान्य बोलचाल में बड़ा शिष्टाचार था। अब हालात बिगड़ गए है। सामान्य बोलचाल में कर्कशता और व्यंग्य का समावेश हो गया है।

आजादी के बाद मनोरंजन के साधन में मेला बड़ा महत्वपूर्ण हुआ करता था। गांव के मेले वहां की संस्कृति को बताते थे और छोटे-बड़े सब आनंद उठाते थे। "रामजस की आतमकथा" से मेले का एक दृश्य –

"वां दनां बालपणा मं मेळा देखता तो घणो सुहावणों लागतो, डोलर का झूला, बांसरी, अलगोजा, नाटक, नोटंकी, सनीमो, मशक का बाजा, चूड़ी का बाजा, रैलम पैल माचै छी। मेळां मं खासकर दसवारा का मेळा मं कास्तकार कास्तकारी को सामान लैवे छा, दुवाळी गौढ़े देख'र घुंघरमाळ बैलां के लैखे माळा, बोवणी का सामान, चड्स, रहट, लट्ठ, पास्यां, लप्पी, गोटा कनारी को काम, कप पलेट, सूटर। लुगायां रंग रंगीला लत्ता मं चोखी लागती, तीज की सवारी सूअर मं खड़ती गांवा का लोग दणी आता लुगायां पैळयो, चूनड़ी, लहरियो, लप्पी लट्टी का लूगडा मं खड़ती, लोठा समाज का लोग गांव बारै खीर, पड़ी मालपुआ, रसमलाई, खावै छा। म्हांई तो पडी, परांठा, मलग्या ज्योई घणा। बरखा मं झड्यां को मजो ओर रै छो। मेळां मं चूड़ी का बाजा सूं गीत बारे खड'र आवै छो। "पल्लो लटके गोरी को पल्लो लटके जरा सो डोडो होजा बालमा म्हारो पल्लो लटके" आगै बधो तो "गंगाजमना" फिलम को गाणों "ढूंढो रै साजना ढूंढो मेरे कान का बाला" बाजे छो। सांची बात छै वां दना लोक धुना पै जो गीत आवै छा चौखा लागता, जस्यां "नैन लड़ गई है तो मनवा में कसक होईबे करी...।"

आजादी के बाद चीन के आक्रमण के बाद की स्थिति और राजनीतिक परिवेश –

"रामजस बोल्यो "भाई सा बालपणा मं देवकीनन्दन पाण्डेय जी सूं समचार सुणतां चीनी सैना आगे बधरी छै। आज या चौकी ले ली क्हाल वा चौकी ले ली तो घणो रोस आतो। पण देश भगति को ताव वां दनां देस का लोगों को देखबा काबिल होवै छो। भाई सा लुगायां नै रकसा कोस में घणा गहणा द्या। म्हांका सैनिक बंदुक की बटां सूं लड्या गोळा बारूद न्ह छो म्हाकै गौड़े। संसद मं कृपलानी जी नै क्ही "नेहरू जी नै घणी सारी जमीं चीन कै कारण कस्यां दे दी।" जवाब मल्यो "बंजर जमी छी।" कृपलानी जी नै क्ही "म्हारी खोपड़ी गंजी है तो कोई काम की कोई नै, कै बोलो ईं कै तांई सीत मात मं कस्यां दे दूं।" ये बातां सांची छै जाणै झूठी रामजस नै क्ह दी। जगत मं बै बातां फैला जावै छै ज्यो आपण सुणां छां।"

आजादी के बाद देश में भ्रष्टाचार इतना बड़ा की आम आदमी का जीना दुभर हो गया। चारों ओर भ्रष्टाचार का बोलबाला है –

"आपरेशन मं पीसा चाले, डॉक्टर दवाई असी मांडै जो मेडीकल पै न्ह मलै, जनता की जमीं पै बण्या प्राईवेट स्कूल लूट र्या छै, अस्पताल मं मारा मारी छै, कांई लेबा मं ईं सरकार यां ईं कोडी साटें जमीं दै छै। पटवारी सूं ले'र तहसीलदार तांई जमीं का नाप का न्याळा न्याळा पीसा बोतें छै, सरकारी जमी सूं रेत, भाटो खाड़बो बड़ा लोगां का बाप की बपौती छै, थाणेदार सूं ले'र एस.पी. साहब तांई बंदी छै च्यूमेरां पीसा चालै छै। राज को न्याव कठी सूं मलैगो भाई सा. रामजी रटबा सूं बी पारं न्ह पड़ै पहल्यां देवता सताया तो करता त्राहिमाम त्राहिमाम, आज आम मनख कर र्यो छै त्राहिमाम त्राहिमाम सबर नाम की चीज न्हरी आदमी के पास अफसर बी खाऊं खाऊं करै अर मजूर बी पीसा पीसा करबा लागग्यो। मजूरी मं ईमानदारी कांई न्ह री।"

आजादी के बाद देश में समरसता लाने, छुआछूत मिटाने के प्रयास भी बहुत हुए हैं। उसी क्रम में उपन्यास "रामजस की आतमकथा" का एक गद्यांश –

"रामजस समाज अेक भीड़ छै ऊं को आंधो काम छै, अंधानुकरण करै छै। बड़ा बड़ा पढ्या लिख्या विद्वाना की नकल बी करै छै। जो असी बातां न्ह मानै। आजादी के बाद अस्या घणा बामण छा जांनै हरिजन बस्तीयां में जा'र भोजन कर्यो, वै जात बारै बी होग्या पण समाज की काण न्ह तोड़ी। ये ई विसमतावां छै आजादी का रूखाळा घर में मात खाग्या। वां का करम बोल र्या छै पण छोटी जात वां का अहसान नै भूलगी, आज वा बात कोई नै, यांबी भरम का भाटा छै। घणा राजां नै मंदर खोल द्या। वै पहल न करता तो कांई होतो। समरसता सूं ई समाज मजबूत होवै छै।"

साहित्यकार समाज में रहता है। उसका दायित्व है कि वो समाज के दिवंगत साहित्यकारों को याद करें, स्वतंत्रता सेनानियों को याद करें, वो लोग जो समाज में किसी भी उपलब्धि को लेकर काम करते हैं उन्हें सम्मानित करें। जितेंद्र निर्मोही ज्ञान भारतीय संस्था से जुड़े हैं। यहां स्वतंत्रता सेनानी, चित्रकार, साहित्यकार, डॉक्टर, रक्तदान कर्ता, शवदाह में समर्पित संस्था, प्राणी विज्ञानी, वनस्पति विज्ञानी, संगीतज्ञ, समाज–सेवकों आदि का सम्मान किया जाता है। "रामजस की आतमकथा" में

साहित्यकारों को स्वतंत्रता सेनानी राम कल्याण टेलर के स्मृति आयोजन में जाने के लिए प्रेरित करना –

"भाई सा. मांगरोळ को जगदीश निरालो बी तो ऊ का भाई जी स्व. रामकल्याण टेलर को सालाना प्रोग्राम रखाणै छै घर की जोड़ी कमाई काम आवै छै।" अब सोचबा की म्हारी बारी छी अस्या साहित्यकारां सूं ई समाज मं जीवतो रै छै। साहित्य ठाम ठाम पै अस्या साहित्यकारां सूं साहित्य का, कार्यक्रम जीवता रै छै अर यै साहित्य नै जिंदा रखाणै छै। यै आपणा आपणा अलाका का रामचन्द्र शुक्ल छै, कांई न्ह तो जिला साहित्य को इतिहास ई रच दे छै धन्य छै यांई। धन्य छै यां को समर्पण भाव।"

आजादी के बाद से आज तक देश की राजनीति में आए बदलाव को भी "रामजस की आतमकथा" के पृष्ठ नं. 47, अध्याय 4 के प्रारंभ में ही बताया है –

"रामजस देस का हालात सूं घणो दुखी छो। अेक दन आयो बोल्यो भाई सा. अेक पार्टी बैलां की जोड़ी सूं चाली गाय बछड़ो आयो, फैर हाथ आग्यो, पण आज क्हाल कांई बी हाथ न्ह लाग र्यो। अेक पार्टी दीपक सूं चाल'र यां आगी, ऊं टेम घणी पार्टीयां घणी पैदा होई अर बगड़ गी। समाजवादी, स्वतंत्र दल, सोशलिस्ट पार्टी वां मं सूं कोई न्ह रह्यो बगत का बरबूळया मं बहगी। मजौ न्ह आयो जनता नैयां दनां झाड़ू सूं घणीं आस बांधी पण वा बी डगमग होगी। संदी पारटीयां हाल आम मनख सूं दूर है। कुण पै बसवास करां राजनीत नै घणो बसवास खोयो छै।"

"रामजस की आतमकथा" में देश के बदलते हालात और आज देश की रक्षा क्षेत्र में सक्षम स्थिति को भी बताया गया है। साथ ही वर्तमान हालात में अमेरिका की भारत के आगे झुकने की मजबूरी भी –

"ई बीच ई चीन म्हांकी सीमां मं लद्दाख मं धसग्यो, मंगर कै कांई माँ अर कांई मांवसी। ऊं मगरूर मनख की नाई दूजा नै कोई मान न दै। जठी बी थूथरो ऊंचो कर्यो धस जावै। राजनीत मं मतलब सू घणा सम्बन्ध बदल जावै छै। ई टेम नेपाल न बी कनगेट्या की नांई आख्याँ बदल दी। पाकिस्तान तो जोर जबरदस्ती ई तूंत रै छै। "घर मं न चणा को चून, बेटो मांगे मोती चूर" अब आप काई कर लो। गजब

तो या छै, म्हांका घर मं धसग्या चीन की बदमासी कैं लैखे, पाकिस्तान मं ताळ्यां बाजरी छै। बरी बगत ई मनख हो कै देस तोल पड़ै छै, ऊ कतनो साथ देगो। अमरीका जिसूं म्हांकौ छत्तीस को आंकड़ो र्यो छो। आज खुला मन सूं साथ दे र्यो छै। आड़ा बगत ज्यो साथ दै ऊ ईं दोस्त छै। चीन अर म्हांकी फौज्यां दोन्यूं आड़ी आमै सामै छै, अेक छणीकस्यो आग की तिंतरो घणो। ई टेम इजरायल, रूस, अमरीका सूं सैन्य सामान आर्या छै, पीसां को पळीतो तो लागणो ई छै। पड़ौस चोखो हो तो दोन्यू आड़ी चैन रै। पण म्हांकै तो दोन्यू पड़ोस्यां कै मरच्यां लाग री छै देस की आजादी के बाद सूं ई चीन होवै चावै पाकिस्तान भोभल मूत र्या छै। पण ओक दन दोन्यूं नै तोळ पड़ज्यागी।"

कोरोना कल के देश में हालात और मजदूर की स्थिति को "रामजस की आतमकथा" में सिलसिलेवार बताया गया है। कोरोना जब कमजोर हो गया, उस समय देश में कोरोना की स्थिति –

"यां दनां करोनो ढीलो पडग्यो छो बगतसर मरीज भी कम हो र्या छा। दशवारो अर द्वाली माथा पै छी, लोगदणी बजार मं भागमभाग लागग्या कोई ढाटो बांध्यां छो, कोई न्ह, कोई कारज कर र्या छा कोई न्ह, पण लाग र्यो छो जाणै या वा भाग छै, टींको भी अब घणो दूरै लाग र्यो छो। जद् भी टीका की आस लागती आगली रपोट मं टींको फैल हो जावै छो। मनख नै भी सोच ली टींको आग्यो तो ठीक छै न्ह तो चालबा यो क्हां तांई घरां रैहगा। ब्याव शादी सूं जुड्या का कतना ई रोजगार जस्यां फोटोग्राफर, रसोई हाळा, दर्जी, टेंट हाळा, फूलमाळा हाळा अब आस लगाबा लागग्या छा। साँची कहग्या बड़ा लोग "साँस छै तो आस बी छै। " ई उम्मीद मं ई मनख जीवै छै। हानि–लाभ, जीवण–मरण, सुख–दुख, रात–दन की नांई आवै छै, खड़ जावै छै। सारा जगत मं ई टेम घणी उठा पटक चाल री छी। यो देस पण सगपण मं दिख्यो।"

कोरोना कल के दौर में ही किसान आंदोलन चल रहा था। सरकार कोरोना का टीका अन्य देशों के मुकाबले सस्ता और बेहतर बनाने में लगी हुई थी –

"अेक आड़ी करोनो चाल र्या छो, दूजी आड़ी किसान आंदोलन चाल य छो, जिमं पंजाब, हरियाणा का कास्तकार छा। थोड़ा घणां यू.पी. का भी, दल्ली को च्योमेर का दरवाजा वांनै रोक मेल्या छा। आम आदमी कुंण सूं कांई है। करोना को टीको जगत मं च्योमेर सूं आबा की खबर छी। रूस, चीन, ब्रिटेन, अमरीका, जरमनी पण भारत देस मं हर ठाम की जानकारी सूं अलग बायोटेक कम्पनी टीको बणा री छी। अब लाग यो छो कै घुटन का दन भी खड्या लोगदणी को मरबो कम होवैगो। जिंदगी अर मौत को घणां परवारां नै खेल देख्यो। पराणा जमाना मं प्लेग अर हैजा सूं घणा लोग मर्या छा अेक ई बाळ-र आता दूजो त्यार छो। दल्ली में अहमदाबाद नै भी अस्या दन देख्या।"

"रामजस की आतमकथा" में सब कुछ सिलसिलेवार चलता है। इसमें साहित्यिक परिवेश है, कोरोना काल में साहित्यकार भिन्न-भिन्न कृतियों का सृजन कर रहे थे। इसमें साहित्यिक संस्थाओं के कार्यकलाप भी है, कोरोना काल में सामाजिक संगठनों की सेवा भी, चीन आक्रमण भी है, पाकिस्तान आक्रमण भी है और देश की बनती-बिगड़ती स्थितियों का वर्णन है।

"रामजस की आतमकथा" में सर्वहारा साहित्यकार रामजस और लेखक के मध्य वार्तालाप से ही समाज का चित्रण है। रामजस शहर में रहता है अतः इसमें शहर का चित्रण है और रामजस गांव का रहने वाला है तो ग्रामीण चित्रण भी है। गांव के चित्रण में गांव के घास भेरुजी, सांगोद का थान, ढूंढी गांव का जलसा, मकर संक्रांति पर्व आदि सांस्कृतिक परिवेश का शानदार चित्रण किया गया। यह उपन्यास नायक प्रधान है।

जितेंद्र निर्मोही के इससे पूर्व प्रकाशित उपन्यास "नुगरी" में स्त्री संघर्ष की जीवंत कहानी है। एक स्त्री का 18-19 वर्ष की आयु में ही विधवा हो जाना, सरकारी नौकरी लगना, वहां का संघर्ष, गांव की जमीन का दर्द, जवानी में गुंडो के मध्य रहकर संघर्ष, परिवार का संघर्ष, समाज का संघर्ष, इन्हीं के बीच में वह खड़ी होती है और अपना जीवन बसर करती है। यह उपन्यास इसलिए ही काफी चर्चा में रहा है कि एक विधवा स्त्री समाज में कैसे उठ खड़ी होती है। वह समाज की उन कुरीतियों को तोड़ती है जहां विधवा रंग-बिरंगी साड़ी नहीं पहन सकती, अच्छा नहीं खा

सकती, अच्छा नहीं पी सकती, अच्छी तरह से किसी से बात नहीं कर सकती, श्रृंगार नहीं कर सकती। वो इन वर्जनाओं को तोड़कर मस्त रहती है, पूर्वी उत्सव धर्मिता निभाती है, मेहंदी लगाती है, आभूषण पहनती है। समाज को बदलने के प्रयास में "नुगरी" की नायिका लाड़कंवर प्रतिबद्ध हो जाती है।

जितेंद्र निर्मोही के हिंदी साहित्य से संबंधित उपन्यास "ना जा रे ! जोगिया" का नायक प्रदीप सामाजिक परिवेश और उसके संस्कार से बंधा हुआ है। वह चित्रकार है और चित्र बनाना ही उसका धर्म है। एक दिन विरक्त होकर आध्यात्म का रास्ता पकड़ लेता है।

सन्दर्भ –

1. द्रौपदी (महाकाव्य) : 2023 : साहित्यगार जयपुर
2. ना जारे। जोगिया (उपन्यास) : 2014 : अपोलो प्रकाशन (साहित्यगार) जयपुर
3. तेरे चेहरे की तलाश (कहानी) : 2016 : वांङ्मय प्रकाशन लाल कोठी जयपुर
4. मुँह बोलते असर : 2020 : जनचेतना प्रकाशन कोआ आलेख, निबंध, ललित निबंध
5. नीर की पीर : 2015 बोधि प्रकाशन जयपुर
6. कफन को पजामो अर दूजी कथावां (कहाणी संग्रै) : 2020 : जन चेतना प्रकाशन कोटा
7. रामजस की आतमकथा (उपन्यास) : 2022 बोधि प्रकाशन जयपुर
8. जंगली जीवाँ री पछाण : 2019 : बोधि प्रकाशन जयपुर
9. हिन्दी उर्दू उपन्यास शिल्प बदलते परिपेक्ष रूप ( ) डॉ. प्रेम भटनागर अर्चल प्रकाशन, जयपुर
10. प्रेमचंद के निबंध साहित्य में सामाजिक चेतना, 1979, अर्चना जैन, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली।
11. हजारी प्रसाद द्विवेदी के साहित्य की सांस्कृतिक चेतना, 1978, रवि कुमार, सन्मार्ग प्रकाशन, नई दिल्ली।

12. भारतीय संस्कृति और सांस्कृतिक चेतना, 1983, डॉ. रामखेलावन पाण्डेय, कादम्बरी प्रकाशन, जवाहर नगर, दिल्ली।
13. कवि और भारतीय संस्कृति के आख्याता, 1979, मैथिलीशरण गुप्त, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद।